International Journal of Enhanced Research in Educational Development, IJERED,
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 2, Mar.-Apr, 2025

कवि पाश: एक क्रांतिकारी कवि की राष्ट्रीय चेतना

तुषार माहन[1], आकाश दीप[2]

[1,2]शोधार्थी, हिन्दी विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर उत्तराखण्ड 246174

सारांश

संसार की प्रत्येक भाषा के काव्य में हर युग में राष्ट्रीय भावना का समावेश देखने को मिलता रहा है। राष्ट्रीय काव्य में संपूर्ण राष्ट्र की चेतना प्रकट होती है। हमारे देश में तो यह राष्ट्रीय चेतना वैदिक काल से ही साहित्य में परिलक्षित होती रही है। अथर्ववेद की एक ऋचा में 'माता भूमिः पुत्रोऽहं प्रथिव्याः, तथा अन्य दूसरी ऋचा में त्वा राष्ट्र भृत्याय' जैसे शब्द समाज के अर्थ में प्रयोग हुए हैं। समाज ही राष्ट्र का सृजन एवम् विकास करता है। वाल्मीकि रामायण में भी 'जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयसी' के साथ राष्ट्रवाद की भावना को ही आगे बढ़ाती है।

मूल शब्द - राष्ट्रीय चेतना, विसंगतिया, राष्ट्रीयता, शोषण, राजनीति, समाज ।

राष्ट्र की संकल्पना के साथ सलंग्न सामाजिक, राजनीतिक. सांस्कृतिक व ऐतिहासिक आदि चेतना, राष्ट्रीय चेतना है। रघुवीर सहाय की कविताओं में देश के प्रति राष्ट्रीय चेतना के दर्शन होते हैं, उनकी कविताओं में देश की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि विसंगतियों, विडंबनाओ के जैसे दृश्य प्रस्तुत होते नजर आते है इनसे उनकी राष्ट्रीय चेतना के विषय में पता चलता है। सहाय जी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन करने से पूर्व राष्ट्रीयता का अर्थ जान लेना नितांत आवश्यक है। 'राष्ट्र" शब्द 'राज्' धातु से 'ष्टन' प्रत्यय लगाने पर बना शब्द है जिसका अर्थ है- राज्य, देश या साम्राज्य।" अमरकोष में राष्ट्र की परिभाषा देते हुए कहा गया है- 'स्वाम्यमात्यसुहृत्कोश राष्ट्र दुर्ग बलानि चः। 'अर्थात् वह (भू भाग) जो दुर्ग, सेना, मंत्री, राजा तथा संपत्ति से युक्त हो, राष्ट्र कहलाता है। राष्ट्र शब्द में 'घ' प्रत्यय' करने पर राष्ट्रीय शब्द बना है इसका अर्थ है 'राष्ट्रभवः अर्थात् राष्ट्र में होने वाला, राज्य से संबन्ध रखने वाला, देशीय। इस शब्द से, भाव अर्थ में, तल (ता) प्रत्यय लगने पर 'राष्ट्रीयता' शब्द बनता है, जिसका अर्थ होता है- देशीयता। राष्ट्रीयता का अर्थ देश की भौगोलिक सीमा के अन्दर रहने वाले जनसमूह की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक चेतना के सम्मिलित रूप से है।

राष्ट्रीयता एक ऐसा मनोभाव है, जो देश की प्रजा को व्यवस्थित रखती है, परतंत्रता के समय मुक्ति के लिए चेतना की चिंगारी को फूंकती है, स्वतन्त्रता संग्राम मे मर मिटने के लिए प्रेरित करती हैं एवं साहित्यकारों को राष्ट्र, जाति तथा धर्म की रक्षा हेतु आन्दोलित तथा राष्ट्र पर अपना सब कुछ न्यौछावर करने वाली कविताएं लिखने का प्रोत्साहन भी देती है। इस राष्ट्रीयता का आरंभ चिंतन के रूप में 19वी शताब्दी मे हुआ था। हिन्दी का राष्ट्रीय साहित्य कुछ सीमा तक उपनिवेशवादी नीतियों और उन नीतियों से घटित भारतीय प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप ही प्रकट हुआ था। यद्यपि राष्ट्रीयता चिंतन के रूप मे आधुनिक युग की धारणा है, फिर भी राष्ट्रीय कविता का मूल बीजांकुरण हमारे वैदिक वाङमय मे ही देखने को प्राप्त हो जाता है। "माता भूमिः पुत्रोऽहं प्रथिव्याः" अर्थात् भूमि माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हैं। तथा "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" जिसका अर्थ है- जननी तथा जन्म भूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। आदि जैसे साक्षी हैं कि अनादिकाल से ही हमारा साहित्यकार राष्ट्रीयता के प्रति सजग रहा है।

आधुनिक युग में तो राष्ट्रीयता का आविर्भाव 1857 के विद्रोह में हो चुका था, परन्तु सन् 1885 में हुए राष्ट्रीय कांग्रेस का उन्मेष और बालगंगाधर तिलक का 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' की उठती हुई मांग,

गाँधी के असहयोग आंदोलन के द्वारा उठी आवाज धीरे धीरे सन् 1942 में विध्वंसक विस्फोट के रूप में फूट पड़ी। भारतेन्दु युग में धर्म-सम्प्रदाय की संकुचित परिधि से बाहर आकर राष्ट्रीयता ने सम्पूर्ण देश को राजनीतिक पराधीनता से आजादी पाने के लिए प्रेरित किया। इस युग का देश-प्रेम अपने मूल रूप में सुरक्षित व अविकृत था। द्विवेदी युग मे हिन्दी साहित्य की राष्ट्रीय काव्य-कृतियों ने नूतन आयामों एवं मार्गों की ओर गमन किया। विस्तार की ओर जाती राजनीतिक चेतना एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप राष्ट्रीयता इस युग की प्रधान भावधारा बनी। मैथिलीशरण गुप्त ने 1912 मे भारतभारती लिखकर देश की जनता का ध्यान उनकी वर्तमान दुर्दशा की ओर आकर्षित किया, साथ ही देश के अतीत की गौरवमयी झाँकी प्रस्तुत करके उन्हें पराधीनता की जंजीरों से आजाद होने के लिए जनता को प्रोत्साहित किया। इस युग के कवियों मे अयोध्या सिंह उपाध्याय ने अपने प्रियप्रवास, वैदेही वनवास आदि काव्यों में देशभक्ति, स्वराष्ट्र प्रेम, लोकहित आदि भावनाओं का चित्रण किया है। इनके अतिरिक्त गयाप्रसाद शुक्ल स्नेही, लाला भगवानदीन, रामनरेश त्रिपाठी, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, 'रामधारी सिंह दिनकर' आदि कवियों ने स्वेदशाभिमान, राष्ट्र प्रेम तथा देश के अतीत के गौरव का गुण गान करके जनजन के हृदय में देश भक्ति जगाने का कार्य किया।

'पाश हमारे राष्ट्रकवि हैं' नामक लेख में सुधीर सुमन लिखते हैं "जिस प्रकार भगतसिंह देश के राष्ट्रनायक के रूप में जाने जाते हैं, ठीक उसी तरह कवि पाश मुझे अपने राष्ट्रकवि लगते हैं। जनता के वास्तविक राष्ट्र के स्वप्नों को आकार देने वाले एवं उसे सच्चाई में बदलने के लिए चलने वाले संघर्षों के कवि हैं।" (सड़कनामा)
अवतार सिंह संधू पाश' क्रांतिकारी पंजाबी कविता आंदोलन के अग्रणी कवियों में से एक है। एक सच्चे क्रांतिकारी कवि होने के कारण उनकी अधिकांश कविताओं में राष्ट्रीय चेतना के गुण प्रमुख रूप से उजागर हुए हैं। कवि पाश अपनी काव्य कृतियों के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक सांस्कृतिक समस्याओं पर गहन विचार करते हुए समाज में स्वतंत्रता, समानता, मानवता, न्याय तथा राष्ट्रीयता के महत्वपूर्ण पहलुओं पर जोर देते हैं। वे हमेशा से ही देश की एकता एवं अखंडता की गरिमा प्रभावित करने वाली विसंगतियों का प्रत्यक्ष रूप से विरोध कर उनमें परिवर्तन लाने की निरंतर कोशिश करते हैं। राष्ट्र की समस्त जनता को वे अपनी कविताओं के माध्यम से सोचने, समझने और कुछ कर गुजरने हेतु प्रेरित करते हैं क्योंकि सामाजिक-राजनीतिक क्षेत्र में लगातार हो रहे अन्याय, शोषण, भ्रष्टाचार आदि विसंगतियों के विरुद्ध कुछ प्रतिक्रिया न देकर मौन धारण किए रहना मात्र मृत दे हके समान है। इसीलिए कवि पाश देश की जनता को अराजक तत्वों एवं विसंगतियों जैसे धार्मिक उन्माद, भ्रष्टाचार, अन्याय, क्षेत्रीयता, रूढ़िगत संकीर्ण सोच एवं भेदभाव पूर्ण अमानवीय व्यवहार आदि दूषित प्रवृत्तियों से दूरी बना कर रखनी चाहिए, जो देश की एकता, अखंडता एवं गरिमा को प्रभावित करें। इसीलिए कवि पाश अपने प्रथम काव्य संग्रह की पहली कविता 'भारत' में देश की जनता को 'भारत' शब्द के सही अर्थ एवं परिभाषा की अवधारणा को प्रस्तुत करते हैं। इस कविता में पाश देश का अर्थ किसी दुष्यंत पुत्र भरत के नाम से नहीं लेते हैं, साथ ही इसके अतिरिक्त वे देश की भौगोलिक सीमाओं को अधिक महत्व नहीं देते हैं वरन् उनके अनुसार इस शब्द के अर्थ तो खेतों में काम करने वाले किसान-मजदूर से है; जो दिन रात खेतों में कड़ी मेहनत कर अन्न उपजाते हैं
"भारत-

इस शब्द के अर्थ
खेतों के उन बेटों में है
जो आज भी वृक्षों की परछाइयों से
वक्त मापते हैं।
उनके पास, सिवाय पेट के, कोई समस्या नहीं
और वह भूख लगने पर
अपने अंग भी चबा सकते हैं।"5

कात्यायनी के अनुसार "पाश के पहले संकलन 'लौहकथा' की बुर्जुआ अंधराष्ट्रवादी परिभाषा के समान्तर मेहनतकश जनता की देशभक्ति की अवधारणा प्रस्तुत करती है।"6

'बेदखली के लिए विनय पत्र शीर्षक कविता में पाश की इसी प्रकार की भावना सामने आती है, जिसमें वे देश के प्रति अपनी राष्ट्रीय चिंता को व्यक्त करते हुए भारत (देश) को किसी एक की संपि के रूप में स्वीकार न करते हुए कहते हैं

"इसका जो भी नाम है, गुंडो की सल्तनत का मैं इसका नागरिक होने पर थूकता हूँ मैं उस पायलट की चालाक आँखों में चुभता भारत हूँ हाँ, मैं भारत हूँ चुभता हुआ उसकी आँखों में अगर उसका अपना कोई खानदानी भारत है तो मेरा नाम उसमें से अभी खारिज कर दो।"7

आगे इसी कविता में कवि पाश ऐसे बुद्धिजीवी वर्गों पर व्यंग्य कसते हैं, जो भारत के अर्थ सामंत पुत्र के नाम से लेकर राष्ट्रीय एकता का ढोंग रचते हैं

"जब भी कोई समूचे भारत की 'राष्ट्रीय एकता' की बात करता है तो मेरा दिल चाहता है-कि उसकी टोपी उछाल दूँ उसे बताऊँ कि भारत के अर्थ किसी दुष्यन्त से संबंधित नहीं वरन् खेतों में दायर है जहाँ अन्न उगता है जहाँ सेंध लगती है...."8

"अब मेरा हक बनता है" शीर्षक कविता में कवि पाश देश की तत्कालीन व्यवस्था को अपनी राष्ट्रीयता के रूप में ग्रहण हुए उसके प्रति चिंता को व्यंग्यात्मक चोट का उद्देश्य बनाते हैं तथा इस कविता के माध्यम से वह देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर कड़ा प्रहार करते हुए अपनी देशभक्ति का परिचय देते हुए लिखते हैं-

"मैंने टिकट खरीदकर आपके लोकतन्त्र का नाटक देखा है अब तो मेरा प्रेक्षागृह में बैठकर हाय-हाय करने और चीखे मारने का हक बनता है।"9

कवि पाश अपनी कविता के माध्यम से देश में भ्रष्टाचार, शोषण, अन्याय एवं व्यक्तिगत स्वार्थों के द्वारा तत्कालीन व्यवस्थाओं को दूषित कर रहे शासक वर्ग के दोहरे चरित्र को उजागर करते हैं। इसमें शासक वर्ग एक ओर तो राष्ट्रहित की बात करते हैं तो दूसरी ओर यही लोग अपने को सYOTI पर बैठाए रखने के लिए जनता पर तरह तरह के शोषण एवं अत्याचार करते हैं। शिवकुमार के अनुसार "पाश के मन में आज जटिल राजनीतिक व्यवस्था तथा शासन तंत्र की बदनीयती, धूर्तता, आक्रामकता तथा छद्म के प्रति जो गुस्सा था, साधारण जन के हित में व्यवस्था के बदलाव की जो ख्वाहिश थी, व्यवस्था के अमानवीय ताम-झाम के छिन्न-भिन्न करने की चेष्टा थी, यह सब उसके रचना-कर्म का सकारात्मक पहलू है।"10

'बेदावा' शीर्षक कविता में वे ऐसे व्यक्तियों को खलनायक के रूप में संबोधित करते हुए कहते हैं
"औरंगजेब की शैतान रूह लालकिले के शिखर अशोक चक्र में प्रवेश कर गई है और उन्होंने संयुक्त मोर्च के सामने दिल्ली की वफादारी की सौंगध उठाई है यदि वे दक्षिण को जाएं भी तो शिवाजी को नहीं शिवाजी गणेश न को संगठित करने जाते हैं उन्होंने देश भर की चिड़िया को, अपराधी घोषित कर दिया है।"11

चमनलाल प्रभाकर ने 'आज की पंजाबी कविता में विद्रोह के स्वर' में इस कविता के विषय में लिखते हैं- "पाश ने तथाकथित क्रान्तिकारियों और सच्चे क्रान्तिकारियों के बीच अन्तर को बहुत ही कलात्मक ढंग से पहचाना है।"12

जब 20वीं सदी में विश्व में साम्राज्यवाद के खिलाफ लगातार संघर्ष हो रहा था, उसी समय यह संघर्ष पूरे विश्व में राष्ट्र प्रेम का अभिन्न अंग बनकर सभी के सामने आया, जिसे कवि पाश ने अपनी 'देशभक्त' शीर्षक कविता के द्वारा साम्राज्यवाद का विचार करते हुए इसके राष्ट्रीय संघर्ष की गौरवमयी कहानी की चर्चा करते हैं और वह चेम्वरा, क्यूबा तथा अफ्रीका के साथ भारत एवं बंगाल के ऐसे हिस्सों का भी जिक्र करते हैं, जहां पर साम्राज्यवाद के विरुद्ध जनसंघर्ष हुए हैं

"एक अफ्रीकी सिर चेग्वरा को नमस्कार करता है आती कहीं भी उतारी जा सकती है अंतरिक्ष में ... पृथ्वी पर क्यूबा में... बंगाल में

भिवंडी और श्रीकाकुलम में फर्क समझा जाता है मैं सूर्य से मुकरा, घास से मुकरा कुर्सी से, मेज से और इसीलिए मैंने लॉन की धूप में बैठकर चाय नहीं पी बंद कमरे की दीवरों पर फायर किए हैं।"13

इस कविता में पाश एक तरफ देश की कथित व्यवस्था पर कड़ी चोट करते हैं, वहीं दूसरी तरफ वे देशभक्ति या राष्ट्रीयता की सकारात्मक अवधारणा भी प्रस्तुत करते हुए कहते हैं अपनी देशभक्ति का परिचय देते हुए लिखते हैं-

"यह भारत है

जो छोटे से ग्लोब पर एशिया की पूंछ बनकर लटका है जिसकी शक्ल पतंगे जैसी है और जो पतंगे की तरह जल जाने के लिए व्याकुल है और यह पंजाब है जहां न कोमल दूब बिछी है न फूलों भरे वृक्ष

चैत आता है, लेकिन उसका रंग शोख नहीं होता।"14

आगे कवि पाश इस कविता में अपने देश की स्तुति करते हुए अपनी मातृभूमि के प्रति गहरी भावना एवं सम्मान व्यक्त करते हैं, साथ ही इस कविता के माध्यम से वे अपने जीवन को और अधिक सार्थक एवं स्वतंत्र बनाने की आशा करते हुए लिखते हैं

"जब मैं ऊँचे हिमालय वाली अपनी पितृभूमि पर बहुत मान करता है

जिसने हम पहाड़ी पत्थरों- जैसे अनगिनत लोगों को पैदा किया और पत्थरों की तरह ही जीने के लिए छोड़ दिया और तब मुझे वह ढिठाई जिसका नाम जिंदगी है रूठी हुई प्रेमिका की तरह प्यारी लगती है और मुझे लाज आती है कि मैं घोंघे की तरह बंद हूँ जबकि मुझे अमीबा की तरह फैलना चाहिए।" 15

कवि पाश वास्तविक अर्थों में एक सच्चे राष्ट्रीय कवि हैं क्योंकि इनकी अधिकांश कविताओं में देश की जनता को एकजुट करने हेतु एक आशावादी संदेश दिया गया है, जो कि देश की गरिमा, एकता, अखंडता एवं विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसीलिए कवि पाश 'हम लड़ेंगे साथी' शीर्षक कविता में देश की जनता को संबोधित करते हुए उन्हें एक साथ बुलाकर प्रत्येक स्थिति में संघर्ष करने के लिए प्रेरित करते हुए लिखते हैं-

"हम लड़ेंगे साथी, उदास मौसम के लिए हम लड़ेंगे साथी, गुलाम इच्छाओं के लिए हम चुनेंगे साथी, जिंदगी के टुकड़े

जब बंदूक न हुई, तब तलवार होगी जब तलवार न हुई, लड़ने की लगन होगी

हम लड़ेंगे कि लड़ने के बगैर कुछ भी नहीं मिलता हम लड़ेंगे अपनी सजा कबूलने के लिए लड़ते हुए मर जाने वालों की याद जिंदा रखने के लिए

हम लड़ेंगे साथी। "16

'पाश का रचना संसार' शीर्षक शोध आलेख में गुलबीर सिंह भाटिया कहते हैं कि "कवि पाश जानता है कि जो लड़ाई वह लड़ रहा है, वह आसान लड़ाई नहीं। लंबे समय यह संघर्ष जारी ही रहेगा।"13

'वक्त आ गया है' शीर्षक कविता के माध्यम से कवि पाश यह संदेश देते हैं कि जनता को अपनी छोटी-छोटी तकलीफों एवं समस्याओं को छोड़कर अब एकता व भाइचारे की ओर ध्यान देना चाहिए और अब अपने वैचारिक मतभेद, झगड़े, मान्यताओं एवं तार्किक मतों से संबंधित उलझाव से बाहर निकलकर एक साथ काम करने के लिए प्रेरित करती है। डॉ०० अश्मिनी कुमार के अनुसार "पाश सही समय की प्रतीक्षा में विश्वास

करता है परंतु ऐसा भी नहीं है कि बेहतर समय हेतु प्रयास न किया जाए। पाश आगे बढ़कर नए सच की स्थापना हेतु प्रयासरत द्रष्टव्य होते हैं। 17

वास्तव में यह कविता एकता, भाइचारे तथा राष्ट्रीय एकता के महत्व को बढ़ावा देने वाले विशेष संदेश को अभिव्यक्त करती है

"अब वक्त आ गया है कि आपसी रिश्ते का इकबाल करें और विचारों की लड़ाई मच्छरदानी से बाहर निकलकर लड़ें और प्रत्येक गिले की शर्म सामने होकर झेलें।"18

कवि पाश का मानना है कि तत्कालीन समय में शोषक वर्ग के विरुद्ध अकेले लड़ना आसान नहीं है। इनके विरुद्ध लड़ने के लिए सामूहिक एकता की अनिवार्यता नितांत आवश्यक है। इसीलिए सर्वहारा वर्ग का अब एक साथ होना, फिर भले वह किसान-मजदूर हो या फिर वह पुलिस का सिपाही ही क्यों न हो। कवि पाश मानते हैं कि पुलिस के सिपाही जो शासन व्यवस्था के अधीन कार्य करते हैं, उनमें और सर्वहारा वर्ग के लोगों में मात्र वेशभूषा का अंतर है परंतु उसके परिवार का दुख एवं समस्याएं सर्वहारा वर्ग के दुखी जीवन के समान ही है। इसी विषय को कवि पाश पुलिस के सिपाही' शीर्षक कविता में अभिव्यक्त करते हैं-

"तुम चाहें आज दुश्मन के हाथ में
लाठी बन गए हो
पेट पर हाथ रखकर बताओ तो कि हमारी जात को अब
किसी से और क्या खतरा है
जिन्हें दुनिया में बस खतरा ही खतरा है। "19

अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाना वास्तव में कवि पाश की कलम का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसीलिए वे एक सशक्त क्रांतिकारी कवि के रूप जाने जाते हैं। कवि पाश अच्छे से जानते हैं कि देशप्रेम एक संकीर्ण भावना न होकर विश्वप्रेम की भावना से संबंधित एक गहन विचार है, जिसकी पृष्ठभूमि में कहीं न कहीं पाश पर लियोन त्रोल्सकी के विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है क्योंकि त्रोल्सकी का मानना था कि जब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सर्वहारा वर्ग एकत्र होगा, तब वास्तविक क्रांति तब ही आ सकेंगी।

कवि पाश के हृदय में देश एवं जनता दोनों के लिए अथाह प्रेम भरा है और यह प्रेम सिर्फ राजनीतिक विडंबनाओं या मनुष्य का मनुष्य से दूर होने के कारण नहीं है बल्कि उसका यह प्रेम मानवता की रक्षा के लिए है अर्थात् अपने लोगों के प्रति लगाव एवं उनकी प्रत्येक स्थिति में सहायता करने के लिए है, भले ही इसके लिए कवि पाश का विरोध भी क्यों न हो। कवि पाश को कितनी ही गहरी पीड़ा से गुजरना पड़ा होगा, जब उन्होंने यह लिखा होगा-

"अपने लोगों से प्यार का अर्थ
दुश्मन देश का एजेंट होना होता है। "20

कवि पाश 1971 के दौरान लंका में चल रहे विद्रोह के क्रांतिकारियों का अभिनंदन करते हुए अपनी अंतरराष्ट्रीय चेतना को व्यक्त करते हैं-

"मेरे लंका के हमराही, जूझते वीर संग्रामी
मैं अदना भारती हाजिर खड़ा तेरी कचहरी में
तेरा शिकवा भी सच्चा है, मेरी भी अर्ज सच्ची है
न मुझ से तू है बेगाना, न तुझसे मैं हूँ इन्कारी।"21

इसी प्रकार 'अहमद सलीम के नाम' शीर्षक कविता में पाश ने पाकिस्तान के प्रसिद्ध पंजाबी कवि अहमद सलीम से उनके अपने जीवन संघर्षों में एकता एवं भाइचारे को अभिव्यक्त किया है-

"ओ कलम के मजदूर ओ मेरे अहमद सलीम चुमकर सींखचे मेरे ताजे बने रिश्ते के वीर मैं भी हैं जेलों का शायर, मेरा भी इश्क है लोग तुम्हें सताते हैं पिंडीवाले और मुझे दिल्ली के तीर।"22

देश विभाजन होने के कारण भारत-पाकिस्तान के अलग होकर एक नए राष्ट्र बनने के पश्चात् भी दोनों देशों में समस्याएं लगभग एक ही जैसी बनी हुई है तथा दोनों देशों के अंदर वैषम्य एवं दुश्मनी की गहरी खाई बनी हुई है। इसी समस्या को पाश चित्रित करते हुए लिखते हैं-

"न हमने जीता है युद्ध और न हारे पाकिस्तान कहीं यह तो पापी पेट थे जो पुतलियाँ बनकर थे नाचे अभी तो बस पेट ही है, आदमी पूरे नहीं अभी न दुश्मन है हम, न किसी के हैं सगे।"23

कवि पाश की अंतरराष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में डॉ० अश्मिनी कुमार लिखते हैं कि "कवि पाश का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार लोगों को एकत्र करने का अर्थ है कि वह संघर्ष को सामूहिक एकता देना चाहता है, जो कि जाति, समुदाय, राज्य देश से ऊपर उठकर विश्व स्तर पर है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी ही विचारधारा के लोगों का समर्थन करता हुआ कवि यह भी दर्शाता है कि देश भिन्न-भिन्न होते हुए भी समस्याएं एक ही हैं।"21 पाश की कविताएँ एक क्रांतिकारी कवि की राष्ट्रीय चेतना को प्रतिबिंबित करती हैं, जहाँ वह समाज में व्याप्त अन्याय, शोषण और असमानता के विरुद्ध आवाज उठाते हैं। उनकी रचनाओं में किसान, मजदूर और आम जनता के जीवन संघर्ष की सच्ची तस्वीर उभरती है। पाश की दृष्टि में राष्ट्र का अर्थ केवल भौगोलिक सीमाओं से नहीं, बल्कि उसमें बसने वाले लोगों के सुख दुख, उनकी आत्मनिर्भरता और सम्मान से जुड़ा है। उनकी कविताएँ उन वर्गों की पीड़ा और उत्पीड़न को उजागर करती हैं, जो अक्सर समाज के हाशिये पर रहते हैं। पाश ने पूंजीवाद, साम्राज्यवाद और सामंती प्रवृत्तियों की कठोर आलोचना करते हुए एक समतामूलक और न्यायपूर्ण समाज का सपना देखा। उनकी कविताएँ केवल प्रतिरोध की भाषा नहीं हैं, बल्कि एक नए समाज के निर्माण का आह्वान भी करती हैं। वे मानवीय मूल्यों, स्वतंत्रता और समानता की रक्षा के प्रति प्रतिबद्ध रहे। पाश की कविताएँ केवल भारतीय संदर्भों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वैश्विक शोषण और संघर्ष के प्रति भी उनकी दृष्टि व्यापक थी। उनकी रचनाएँ हमें जागरूक करती हैं कि राष्ट्र के निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण तत्व इसकी जनता है, और उनकी गरिमा व अधिकारों की रक्षा ही सच्ची राष्ट्रीय चेतना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आप्टे वामन शिवरामएसंस्कृत. हिन्दीकोशए पृष्ठ स० ८५६
2. श्री अनिरुद्ध संहिताए अध्याय १०एश्लोक ११
3. रशिकेश डॉ, स्वरूप, आदर्श हिन्दी संस्कृत कोषए पृष्ठ. ५०५
4. मंगल, डॉ लालचंद गुप्तः संवद्धए हिन्दी साहित्य की वैचारिक प्रष्ठभूमि, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी पंचकुलाए पृष्ठ.६९
5. लाल, चमन (संपा० एवं अनु०): बीच का रास्ता नहीं होता, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 11, प्रकाशन वर्ष-2021, पृ०सं० 29
6. लाल, चमन (संपा०): वर्तमान के रूबरू पाश, पाश को पढ़ते हुए कात्यायनी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-2000, पृ०सं० 104
7. लाल, चमन (संपा०): बीच का रास्ता नहीं होता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2000, पृ०सं० 186
8. लाल, चमन (संपा०): बीच का रास्ता नहीं होता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2000, पृ०सं० 29
9. लाल, चमन (संपा०): बीच का रास्ता नहीं होता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2000, पृ०सं० 38
10. मिश्र, शिवकुमारः दुखों का साथीः खुशी का मुहाफिजः पाश (वर्तमान के रूबरू पाश), वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-2000, पृ०सं० 81

11. परिहार, सुभाष (संपा० एवं अनु०): अक्षर अक्षर सम्पूर्ण पाश काव्य, लोकगीत प्रकाशन, सरहिंद, प्रकाशन वर्ष-1992, पृ०सं० 31
12. प्रभाकर, चमन लालः 'आज की पंजाबी कविताः विद्रोह के स्वर', त्रिशूल प्रकाशन, जालंधर।
13. लाल, चमन (संपा०): बीच का रास्ता नहीं होता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-2000, पृ०सं० 41
14. लाल, चमन (संपा०): बीच का रास्ता नहीं होता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-2000, पृ०सं० 41
15. लाल, चमन (संपा०): बीच का रास्ता नहीं होता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-2000, पृ०सं० 41
16. लाल, चमन (संपा०): बीच का रास्ता नहीं होता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2000, पृ०सं० 78
17. भाटिया, गुलबीर सिंहः पाश का रचना संसार (वर्तमान के रूबरू पाश, संपा० चमल लाल), वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-2000, पृ०सं० 114
18. कुमार, अश्विनीः कुमार विकल और पाश के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, प्रकाशन वर्ष-2008, पृ०सं० 186
19. लाल, चमन (संपा०): बीच का रास्ता नहीं होता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष-2000, पृ०सं० 43
20. लाल, चमन (संपा०): बीच का रास्ता नहीं होता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2000, पृ०सं० 94
21. लाल, चमन (संपा०): बीच का रास्ता नहीं होता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2000, पृ०सं० 33
22. परिहार, सुभाष (संपा० एवं अनु०): अक्षर अक्षर सम्पूर्ण पाश काव्य, लोकगीत प्रकाशन, सरहिंद, प्रकाशन वर्ष-1992, पृ०सं० 87
23. परिहार, सुभाष (संपा० एवं अनु०): अक्षर अक्षर सम्पूर्ण पाश काव्य, लोकगीत प्रकाशन, सरहिंद, प्रकाशन वर्ष-1992, पृ०सं० ४४
24. परिहार, सुभाष (संपा० एवं अनु०): अक्षर अक्षर सम्पूर्ण पाश काव्य, लोकगीत प्रकाशन, सरहिंद, प्रकाशन वर्ष-1992, पृ०सं० ४४
25. कुमार, अश्विनीः कुमार विकल और पाश के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, प्रकाशन वर्ष-2008, पृ०सं० 189